रहमो मेहरबानी

अल्लामा सै0 मुहम्मद रज़ी साहब क़िब्ला, पाकिस्तान

हमे अपनी इन्फ़ेरादी और इज्तेमाई ज़िन्दगी में जिस चीज़ के सबसे से ज़्यादा ज़रूरत हैं। वह रहम और मेहरबानी का जज़्बा है जिसका हासिल ये है कि एक आदमी दूसरे आदमी के साथ मेहरबानी का बर्ताव किया करे और मुहब्बत व ख़ुलूस और रहमदिली से पेश आया करे। जब तक ये जज़्बा मौजूद न होगा उस वक़्त तक कोई मुआशेरा कभी तरक़्की नहीं कर सकता और न अफ़राद ही खुशहाल रह सकते हैं। हम सब इस हक़ीक़त से आग़ाह है कि अल्लाह अपने बन्दों पर सबसे ज़्यादा मेहरबान और रहम करने वाला है और वह हमें भी इसका हुक़्म देता है कि हम एक दूसरे पर रहम करें और शफ़शत और मुहब्बत से पेश आते रहें। इसका एक साफ़ और वाज़ेह सबूत यह है कि जब हम सब मुसलमान क़ुरआन मजीद की तिलावत करते हैं तो पीशतर ''बिसिमिल्लाह हिर्रहमानर्निरहीम'' कहते है। आप देखिये कि इसमें लफ़्ज़े अल्लाह जो इसमें ज़ाते इलाही है इसके बाद जो उसके मोक़द्दस सफ़ाती नाम लिये जाते है वह रहमान व रहीम है यानि बे इन्तेहा रहम फ़रमाने वाला। इससे मालूम होता है कि अल्लाह के नज़दीक उसके सफ़ाती नामों में वह नाम सबसे मुक़द्दम है जिनसे उसकी रहमत ज़ाहिर होती है। ये सिफ़ते रहमत इस क़दर अहमियत रख़ती है कि अल्लाह ने अपने रसूल (स0) के रहीम व करीम होने की शान को क़ुरआन मजीद में बड़ी ख़ुसूसियत के साथ इस तरह बयान फ़रमाया है। वमाअरसलनाक इल्ला रहमतुल लिलआलमीन (सूरह अनबिया) यानि (ऐ पैग़म्बर स0) हमने तुम्हे तमाम जहानों के लिये रहमत बनाकर भेजा है। सरवरे काएनात की रहम दिली का ये आलम था कि आप बारहा फ़रमाया करते थे। ''जो शख़्स रहमदिली से काम नहीं लेता वह हम में से नहीं है'' और कभी इसतरह फ़रमाते थे कि ''तुम ज़मीन पर बसने वालों पर रहम किया करो तो आसमान वाला यानि अल्लाह तुम पर रहम फ़रमयेगा'' एक मरतबा एक शख़्स अपने छोटे से बच्चे को अपने सीने से लगाये हुए हुज़ूर (स0) की ख़िदमते अक़दस में हाज़िर हुआ तो आपने फ़रमाया कि मालूम होता है तुम इस बच्चे से बड़ी मुहब्बत रखते हो। उसने अर्ज़ की जी हां! मैं इससे बहुत मुहब्बत रखता हूँ और इसे बेहद चाहता हूँ। ये सुनकर आँहज़रत ने फ़रमाया कि तुम इस बात को याद रखो कि तुम्हारा ख़ालिक और तुम्हारा अल्लाह इससे बहुत ज़्यादा तुमसे मुहब्बत रखता है और तुम पर बेहद रहीम है। एक हदीस में इरशाद हुआ है कि मुसलमानों की बाहमी मुहब्बत और रहमदिली की शान ऐसी ही होना चाहिए जैसे एक बदन होता है कि जब इसके किसी ओज़ू में तकलीफ़ पैदा होती है तो पूरा बदन दुखने लगता है बस यूं ही तमाम मुसमलानों को चाहिए की वह एक दूसरे के दर्द और एक दुसरे के साथ शरीके हाल रहें और सिर्फ यही नहीं कि आपने हमें रहम व शफ़क़त की तालीम सिर्फ मुसलमानों ही के लिये दी हो बल्कि कसीर हदीसों में हज़ूर ने हुक़्म दिया है कि हम हर इन्सान के साथ रहम व शफ़कत का बरताव करें ख़्वाह वह किसी जग़ह और मुल्क का रहने वाला हो या किसी मज़हब का पाबन्द हो बल्कि इससे भी बड़ कर यहां तक फ़रमाया है कि हम हर जानदार पर रहम व शफ़क़त से क़म लिया करें।

बिलाशुबह इस्लाम ने हमें जुल्म से रोका है और मुहब्बत व रहम की तालीम दी है। अगर इसलाम की इस अहम तरीन बुनयादी तालीम पर इनसानी मुआशेरा पूरी तरह अमल करने लगे तो आज ये ख़ौफ़ और नफ़रत भरी हुई दुनिया अमन व सलामाती और मुहब्बत की जन्नत बन जाये।